

“ शब्द ”

परिभाषा : अक्षरों या वर्णों से निर्मित सार्थक एवं स्वतंत्र ध्वनि (ध्वनि समूह) को शब्द कहते हैं।

शब्दों के भेद

1. सार्थक : जिन शब्दों का कुछ निश्चित अर्थ होता है।
उनको सार्थक शब्द कहते हैं।

कमल, घर, मेढक, विद्यालय

2. निरर्थक : जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता है
वो निरर्थक शब्द कहलाते हैं।

फटाफट, सजम

* वनावट के आधार पर * उत्पत्ति के आधार पर

(1) रूढ़ शब्द

(2) यौगिक शब्द

(3) योगरूढ़ शब्द

(1) तत्सम शब्द

(2) तदभव शब्द

(3) देशज शब्द

(4) विदेशी शब्द

* शब्द *

* वर्णों के सार्थक समूह को "शब्द" कहते हैं।

सजम - निरर्थक शब्द

परिवार - सार्थक शब्द

* बनावट के आधार पर शब्द के भेद 3 होते हैं।

1. रुढ़ शब्द

2. यौगिक शब्द

3. योगरुढ़ शब्द

1. रुढ़ शब्द :

“ वे शब्द जो वर्णों के सार्थक योग से बनते हैं।

उन्हे रुढ़ शब्द कहते हैं। ”

अ + ना + र = अनार

पि + ता = पिता

स + त + ल + ज = सतलज

स + मा + ज = समाज

(जो शब्द वर्णों में दूट सकते हैं, रुढ़ शब्द कहलाते हैं)

मकान, पानी, घड़ा, कमल, साइकिल

२. यौगिक शब्द :

“ वे शब्द जो दो शब्दों से मिलकर बनते हैं तथा एक ही अर्थ देते हैं ” यौगिक शब्द कहलाते हैं।

सब्जी + मण्डी = सब्जीमण्डी

बस + चालाक = बसचालाक

दूधवाला, घुड़सवार, गजगामिनी, पवनचक्की

३. योगरुद्ध शब्द :

“ वे शब्द जो दो सार्थक शब्दों से मिलकर बनते हैं तथा उनके कई अर्थ होते हैं। उनमें से केवल एक अर्थ को ही लेते हैं। बाकी अर्थों को छोड़ देते हैं। उन्हें योगरुद्ध कहा जाता है। ”

जलज - योगरुद्ध → पानी में जन्म लेने वाला

दशानन - योगरुद्ध → दस मुख वाला

चतुर्भुज - “ → 4 भुजाएँ हैं जिसकी

नेताजी - “ → नेतृत्व करने वाला

* जो शब्द किसी देवी / देवता या अन्य का पर्यायवाची होती है उसमें **बहुब्रहि समास** होता है। प्रत्येक बहुब्रहि समास का पद **योगरुद** होता है।

दशानन, षटानन, त्रिनेत्र, चतुरानन, पंचानन, वीणापाणी लम्बोदर ,

* 'जल' के किसी भी पर्यायवाची के अंत में यदि ज, द, धि लगा हो तो ऐसा बना शब्द **योगरुद** होता है।

* उपनाम एवं उपाधियाँ भी योगरुद होती हैं।
बापू, नेताजी, दिनकर , सुल्तानपुरी, लुधियानवी
आजाद, हरिश्चन्द्र

“शब्द”

देशज शब्द : वे शब्द जो हमारे देश में किसी स्थानीय भाषा / बोली / क्षेत्र विशेष से जिन शब्दों की उत्पत्ति होती हैं।

उदाहरण : गड़बड़ , डिब्बा , डिबिया , लोटा , जंगला खिड़की , जुगाड़ , जुगाड़ु , पगड़ी , घड़ा-घड़ खाट , झाड़ , खुसर-पुसर , झुग्गी , उपपटांग , धोली ,

विदेशी शब्द (विदेशज) :

“ वे शब्द जो विदेशी भाषाओं से लिये गये हों हिन्दी में उन शब्दों का प्रचलन हो रहा है ”
या

“ विदेशी भाषाओं से हिन्दी में आये शब्दों को विदेशी शब्द कहा जाता है। ”

विदेशी भाषाओं में मुख्यतः

अंग्रेजी , अरबी , तुर्की , पुर्तगाली , फारसी , फ्रेंच , डच , चीनी ,

“ विदेशी शब्द ”

(विदेशी)

अंग्रेजी : क्रिकेट, अपील, इंच, कलेक्टर, कमेटी
शब्द डिगरी, फण्ड, फीस, फुट, मील, रेल
कोट, टिकट, टिन, नोटिस, डॉक्टर

अरबी : औरत, तारीख, फकीर, किताब, अदालत
शब्द मुकदमा, अल्लाह, सिफारिश, अक्ल, हाल
कब्र, एहसान, इलाज, अमीर, तनख्वाह, खैतराज,
आखिर, कमल, कीमत, खत, ख्याल, जुलूस,
जलसा, जवाब, जहाज, तकदीर, फकीर, तरब्की
दिमाग, मुसाफिर, हाजिर, हिम्मत।

फारसी : हुफ्ता, सितार, रंग, चैहरा, सरकार, गवाह
मुफ्त, कारीगर, खुदा, आदमी, उम्मीदवार,
कमर, खर्च, गुलाब, चश्मा, चाकू, चापलूस,
दाग, दुकान, बाग, मोजा, आवारा, सूद, चरखा

पुर्तगाली शब्द : कमरा, नीलाम, अनानास,
इस्पात, कमीज, आलपिन, अलमारी, इस्त्री,
गमला, गौमी, गोदाम, चाबी, पपीता, संतरा
बोतल, बाल्टी, मिस्त्री, फीता ।

फ्रेंच शब्द : 'अंग्रेजी'; अंग्रेज, कूपन, कार्टूस
कफरू, बिगुल

चीनी शब्द : चाय, लीची, चीकू, चीनी

तुर्की शब्द : उर्दू, बहादुर, तुर्क, कैंची, ताश
तोप, दरोगा, लाश, बीबी, कुर्त

तत्सम और तदभव

तत्सम: वे शब्द जो संस्कृत भाषा से हिन्दी में आए। और उन्हें ज्यों का त्यों ही प्रयुक्त किया जाता है।

या

संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में यथावत ले लिये गए हैं। तत्सम कहलाते हैं।

तत्सम शब्दों की पहचान

* तत्सम शब्दों में 'आधा वर्ण' का प्रयोग होता है।
य, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र, व, श, ष, ऋ
का प्रयोग भी तत्सम में किया जाता है।

तदभव: वे शब्द जो संस्कृत से उत्पन्न
या विकसित हुए हैं। या

* जो संस्कृत शब्द कुछ रूप परिवर्तन के साथ हिन्दी शब्दावली में आ गये हैं, वे तदभव कहलाते हैं।

तत्सम शब्दों में प्रयुक्त वर्णों की परिवर्तन

तत्सम

तदभव

य

⇒

ज

यमुना

⇒

जमुना

क्ष

⇒

ख

ज्ञ

⇒

ग्या

श्र

⇒

स

व

⇒

ब

क्ष, ष

⇒

स

ऋ

⇒

रि

तत्सम शब्द

⇒

तदभव शब्द

अंगरक्षक

→

अंगरखा

अष्टादश

→

अठारह

क्षेत्र

→

खेत

अष्ट

→

आठ

अन्न

→

अनाज

अक्षत

→

अच्छत

अद्य

→

आज

तत्सम शब्द

तदभव शब्द

आलस्य	→	आलस
अश्रु	→	आँसू
उज्ज्वल	→	उजला
उष्ण	→	ऊँट
उल्खन	→	ओखली
उपल	→	ओला
उत्साह	→	उद्याह
उपर्युक्त	→	उपशेख्त
रुला	→	इलायची
क्रुद्ध	→	क्रोधित / क्रोधी
कटु	→	कटुआ
कृष्ण	→	कान्हा, किसन
गर्भि	→	गदहा (गढा)
ग्राम	→	गाँव
गो	→	गाय
गृह्य	→	गिह्य (गीब)
क्षीर	→	खीर
स्तम्भ	→	खम्भा

तत्सम

तदभव

गणेश ⇒ गनेश

गलत ⇒ गलत

घृत ⇒ घी

घोटक ⇒ घोड़ा

चर्म ⇒ चमड़ा

चंद्र ⇒ चाँद

चतुर्दश ⇒ चौदह

चूर्ण ⇒ चूरन

वातायन ⇒ जंगला

जब ⇒ जौ

जमाता ⇒ जमाई

युक्ति ⇒ जुगति

त्वरित ⇒ तुरंत

तपस्वी ⇒ तपसी

तीर्थ ⇒ तीरप

दधि ⇒ दही

द्विप्रहरी ⇒ दुपहरी

दुग्ध ⇒ दूध

द्विपट ⇒ दुपट्टा

तत्सम

तदभव

धान्य = धान

धूम = धुँआ

नृत्य = नाच

नसिका = नाक

दर्शन = दरसन

हरिद्रा = हल्दी

हीरक = हीरा

हरित = हरा

शब्द = सबद

सारथि = सार्थी

अस्थि = हड्डी

साहित्यिक = साहित्यक

श्रेष्ठी = सेठ

सौभाग्य = सुहाग

संन्यासी = सन्यासी

अत्र = यहाँ

रज्जू = रस्सी

मनुष्य = मानुस

मातृ = माँ

“अत्यय शब्द” (अविकारी शब्द)

“जिन शब्दों का रूप **लिंग, वचन, काल** के अनुसार परिवर्तित नहीं होता है। अत्यय कहलाते हैं।

1. गाड़ी धीरे-धीरे चल रही हैं। (धीरे)
2. मैं रोजाना व्यायाम करता हूँ। (रोजाना)

- क्रिया-विशेषण (Adverb)
- संबंधबोधक (Preposition)
- विस्मयादिबोधक (Interjection)
- समुच्चयबोधक (Conjunction)

विकारी शब्द (अत्यय)

वे शब्द जिनमें **लिंग, वचन, काल, या पुरुष** के अनुसार परिवर्तन होता है।

संज्ञा

सर्वनाम

विशेषण

क्रियाएँ

वाक्य (Sentence)

“सार्थक शब्दों के व्यवस्थित रूप को वाक्य कहते हैं।”



मनुष्य के विचारों को पूर्णता से प्रकट करने वाले पद समूह को वाक्य कहते हैं।

अथवा

वाक्य, शब्दों का वह सार्थक समूह है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति लिखकर या बोलकर अपने भाव या विचारों को प्रकट करता है।

वर्ण (अक्षर) \Rightarrow शब्द \Rightarrow शब्द समूह

वाक्य \Leftarrow उपवाक्य \Leftarrow वाक्यांश \Leftarrow

वाक्य के दो प्रमुख अंग होते हैं

1. उद्देश्य (Subject)
2. विधेय (Predicate)

उद्देश्य: वाक्य में जिसके बारे में कुछ बताया जाता उसे उद्देश्य कहते हैं।

अथवा वाक्य का 'कर्ता' उद्देश्य है।

राजू खेलता है।

└─┬─> उद्देश्य

उद्देश्य के विभिन्न रूप

वाक्यों में उद्देश्य (कर्ता) संज्ञा, सर्वनाम विशेषण, वाक्यांश आदि के रूपों में आता है।

1. राजू स्कूल जाता है। (राजू-संज्ञा)
2. तुम बहुत ईमानदार हो। (सर्वनाम-तुम)
3. मुख्य व्यक्ति परेशान रहता है। (विशेषण)

2. **विधेय** : वाक्य में कर्ता (उद्देश्य) के बारे में जो कुछ कहा जाता है। उसे विधेय कहते हैं।

उदाहरण : राजेश दौड़ता है।

‘दौड़ता’ \Rightarrow ‘विधेय’ है।

वाक्य के भेद

रचना के आधार पर वाक्य के 3 भेद हैं।

1. सरल वाक्य (Simple Sentence)
2. मिश्रित वाक्य (Complex Sentence)
3. संयुक्त वाक्य (Compound Sentence)

1. सरल वाक्य :

जिन वाक्यों में एक विधेय (क्रिया) होती है और एक उद्देश्य (कर्ता) होता है। उसे सरल वाक्य कहते हैं।

राजीव का परीक्षा में चयन हो गया।

↓
उद्देश्य

↓
विधेय



2. मिश्रित वाक्य

इन वाक्यों में एक मुख्य (प्रधान) उपवाक्य और दो या अधिक आश्रित उपवाक्य (आश्रित - अपना अर्थ देने के लिये किसी दूसरे पर निर्भर करना) होते हैं।

उदाहरण : मैं जानता हूँ कि तुम्हारे नम्बर अच्छे आसूँगे।

↓
प्रधान वाक्य

↓
आश्रित उपवाक्य

Note - मिश्र वाक्य में उपवाक्य - कि, जो, ज्यों-ज्यों, क्योंकि, चूँकि, यदि, यद्यपि, जहाँ, जब, ताकि, इसलिये, अतएव, सो, तथापि, चाहे आदि जैसे अव्यय जुड़े रहते हैं।

उपवाक्य : ऐसा पद समूह जिसका अपना अर्थ हो, जो एक वाक्य का भाग हो और जिसमें उद्देश्य और विधेय हो उपवाक्य कहलाता है।

उ. संयुक्त वाक्य :

जिन वाक्यों में साधारण अथवा मिश्रित वाक्यों का मेल संयोजक अव्ययों द्वारा होता है।

उदाहरण : मैं बाजार गया और मोहन आया।

इस वाक्य को जोड़ने वाला संयोजक "और" है।

Note : संयुक्त वाक्यों में प्रत्येक वाक्य अपनी स्वतन्त्र सत्ता बनाये रखता है। वह एक दूसरे पर आश्रित नहीं होता केवल संयोजक अव्यय उन स्वतन्त्र वाक्यों को जोड़ते हैं।

संयोजक : जब एक साधारण वाक्य दूसरे साधारण या मिश्रित वाक्य से संयोजक अव्यय के द्वारा जुड़ा हो

संयोजक \Rightarrow और , व , तथा , एवं , भी

आदि शब्द संयोजक शब्द हैं।

केवल राजू ही नहीं, राजेश ने भी टॉप किया

वाक्य के भेद

अर्थ के आधार पर वाक्य के 8 भेद हैं।

- | | |
|---------------------|---------------------|
| 1. विधिवाचक वाक्य | 5. विस्मयवाचक वाक्य |
| 2. निषेधात्मक वाक्य | 6. सन्देहवाचक वाक्य |
| 3. आज्ञावाचक वाक्य | 7. इच्छावाचक वाक्य |
| 4. प्रश्नवाचक वाक्य | 8. संकेतवाचक वाक्य |

1. विधिवाचक वाक्य :

ऐसा वाक्य जिससे किसी काम के होने या किसी के अस्तित्व का बोध हो, वह वाक्य विधिवाचक कहलाता है।
अर्थात् जिसमें कोई जानकारी (Information) दी हो।

- उदाहरण :
1. भारत मेरा देश है।
 2. राजू ने गाना गाया।
 3. गौरव रामायण पढ़ता है।

2. निषेधवाचक वाक्य :

ऐसा वाक्य जिसमें किसी कार्य के निषेध (नहीं) का बोध रहता है।

- उदाहरण :
1. मैं बाजार नहीं जाऊँगा।
 2. मोहन क्रिकेट नहीं खेलता।

3. **आज्ञावाचक वाक्य**: ऐसे वाक्य जिससे किसी आज्ञा का बोध हो, आज्ञावाचक वाक्य कहलाते हैं।

उदाहरण: 1. तुम बाजार जाओ।

2. कृपया शांति बनाये रखें।

3. तुम मेरे साथ चलो।

4. **प्रश्नवाचक वाक्य**: ऐसे वाक्य जिससे किसी प्रकार के प्रश्न पूछे जाने का बोध हो, प्रश्नवाचक कहलाते हैं।

उदाहरण: 1. तुम कहाँ जा रहे हो?

2. क्या आज रविवार है?

5. **विस्मयवाचक वाक्य**: ऐसे वाक्य जिससे किसी आश्चर्य, दुःख या सुख का बोध हो।

उदाहरण: अरे! तुम आ गये।

शाबाश! तुम जीत गये।

6. **सन्देहवाचक वाक्य**: ऐसे वाक्य जिससे किसी बात का सन्देह प्रकट होता है।

• शायद वह आ जाये।

• संभवतः वह सुधर जाएगा।

7. इच्छावाचक वाक्य : ऐसे वाक्य जिससे किसी प्रकार की इच्छा या शुभकामना का बोध हो,

उदाहरण : तुम सफल हो।

भगवान तुम्हें लंबी उम्र दे।

सदा सुहागन रहो।

8. संकेतवाचक वाक्य :

जब एक वाक्य दूसरे वाक्य की सम्भावना पर निर्भर हो।

उदाहरण : अगर तुम जल्दी उठोगे तो स्वस्थ रहोगे
पानी न बरसता तो धान सूख जाता।